श्री तीर्थ स्तोत्र

श्री गणेशाय नमः ।।
श्री स्वामी समर्थाय नमः ।।
श्री दत्तात्रेयाय नमः ।।
श्री सरस्वत्यै नमः ।।

अथ ध्यानम्

नमो स्वामी नाथम् सन्मार्ग दर्शकम् ।
जीवन धारीच सद्गुरु रायम् महाराज रुपम् ब्रम्हांडनायकम् ।।
पवित्रकारम् पूण्यवर्धकम् सुदर्शनधारीच शौचकारी धावनकर्ताच।
इदं स्वामी सद्गुरु रुपम् हृदी स्थापयामी।।
पुष्कर नैमिषारण्य प्रयाग धर्मारण्य धेनुक।
चम्पकारण्य सैन्धवारण्य मगधारण्य दण्डकारण्य गया च।।
प्रभास श्रीतीर्थ कनखल भृगुतुंग हिरण्याक्ष।
भीमारण्य कुशस्थली लोहाकुल केदार तथा मन्दरारण्य।।
महाबल कोटि रुप शूकर चक्र।
योग सोम शाखोटक कोकामुख बदरीशैल।।
तुंगकूट स्कन्दाश्रम अग्निपद नञ्चकूट मध्यकेसर चक्रप्रभम च।
मतंग कुशदण्ड दंष्ट्राकुण्ड विष्णुतीर्थ सार्वकामिकतीर्थ।।
मत्स्यतिल ब्रम्हकुण्ड वन्हिकुण्ड सत्यपद तदनंतर चतु:स्त्रोतम च।
चतु:श्रृगं व्दादशधार मानस स्थूलश्रृंग स्थूलदण्ड।
उर्वशी लोकपाल मनुवर सोमशैल षष्ठीच सदाप्रभ।।
मेरूकुण्ड सोमाभिषेचनतीर्थ महास्त्रोत कोटरक पञ्चधार।
त्रिधार सप्तधार एकधार अमरकण्टक शालग्राम म।।
कोटिद्रुम बिल्वप्रभ देवह्रद विष्णुह्रद शङ्खप्रभ।
देवकुण्ड वज्रायुध अग्निप्रभ पुंनाग तथैव देवप्रभ।।
विद्याधरतीर्थ गान्धर्वतीर्थ मणिपूरगिरी पञ्चह्रद पिण्डारक।
मलव्य गोप्रभाव गोवर वटमूल स्नानदण्डम।।
विष्णुपद कन्याश्रम वायुकुण्ड जम्बूमार्ग गभस्तितीर्थ।
यजातिपतन भद्रवट महाकालवन नर्मदातीर्थ तीर्थवज्रम।।

अर्बुद पिंगतीर्थ वासिष्ठतीर्थ पृथुसंगम दौर्वासिक।
पिञ्जरक ऋषितीर्थ ब्रम्हतुंग वसुतीर्थ तथा कुमारिकाम।।
शक्र पञ्चनद रेणुका पैतामह विमल।
रुद्रपाद मणिमान् कामाख्य कृष्ण कुलिंगकम।।
यजनम् याजनम् ब्रम्हवालुक पुष्पन्यास पुण्डरीक।
मणिपूर दीर्घसत्र हयपद अनशनम् गंगोद्भेद।।
शिवोद्भेद नर्मदोद्भेद वस्त्रापद दारूबल छायारोहण।
सिद्धेश्वर मित्रबल कालिकाश्रम वटावट भद्रवट।।
कौशाम्बी दिवाकर सारस्वतद्वीप विजयतीर्थ कामदतीर्थ।
रूद्रकोटि सुमनस्तीर्थ समन्तपञ्चक ब्रम्हतीर्थ तथा सुदर्शनतीर्थम च।।
पारिप्लवं पृथूदकं दशाश्वमेधिकं साक्षिदं विजयं।
पञ्चनदं वाराहं यक्षिणीह्रदं पुण्डरीकं सोमतीर्थं।।
मुञ्जवट बदरीवन रत्नमूलक स्वर्लोकद्वार पञ्चतीर्थ।
कपिला सूर्यतीर्थ शङखिनी गोभवनतीर्थ यक्षराज।।
ब्रम्हावर्त कामेश्वर मातृतीर्थ शातवनतीर्थ स्नानलोमापह।
माससंसरक केदार ब्रम्होदुम्बर सप्तर्षिकुण्ड देवीतीर्थम।।
जम्बुकतीर्थ ईहास्पद कोटिकूट किंदान किंजय।
कारण्डव अवेध्य त्रिविष्टप पाणिखात तथा मिश्रक।।
मधुवट मनोजव कौशिकी देवतीर्थ ऋणमोचन।
नृगधूम अमरह्रद श्रीकुञ्ज शालितीर्थ नैमिषेयतीर्थम।।
ब्रम्हस्थान कन्यातीर्थ मनसतीर्थ कारुपावनतीर्थ सौगन्धिकवन।
मणितीर्थ सरस्वती ईशानतीर्थ पाञ्चयज्ञिक तथा त्रिशूलधार।।
माहेन्द देवस्थान कृतालय शाकम्भरी देवतीर्थ।
सुवर्णतीर्थ कलिह्रद क्षीरस्त्रव विरुपाक्ष भृगुतीर्थ म।।
कुशोद्भवतीर्थ ब्रम्हयोनी नीलपर्वत कुब्जाम्बक वसिष्ठपद।
स्वर्गद्वार प्रजाद्वार कलिकाश्रम रद्रावर्त तथा सुगन्धाश्व।।
कपिलावन भद्रकर्णह्रद शंकुकर्णह्रद सप्तसारस्वत औशनतीर्थ।
कपालमोचन अवकीर्ण काम्यक चतु:सामुद्रिक शतिकम।।

सहस्त्रिक रेणुक पञ्चवटक विमोचन स्थाणुतीर्थ।।
कुरुतीर्थ कुशध्वज विश्वेश्वर मानवकूप तथा नारायणाश्रम।।
गंगह्रद बदरीपावन इन्द्रमार्ग एकरात्र क्षीरकावास।
दधीच श्रुततीर्थ कोटितीर्थस्थली भद्रकालीह्रद अरुन्धतीवन म।।
ब्रम्हावर्त अश्ववेदी कुब्जावन यमुनाप्रभव वीर।
प्रमोक्ष सिन्धूत्थ ऋषिकुल्या कृत्तिका तथा उर्वीसंक्रमण।।
मायाविद्योद्भव महाश्रम वेतसिका सुन्दरिकाश्रम बाहुतीर्थ।
चारुनदी विमलाशोक मार्कण्डेयतीर्थ सितोद मत्स्योदरी म।।
सूर्यप्रभ अशोकवन अरुणास्पद शुक्रतीर्थ वालुकातीर्थ।
पिशाचमोचन सुभद्राह्रद विरलदण्डकुण्ड चण्डेश्वरतीर्थ
तथा ज्येष्ठस्थानह्रद।।
ब्रम्हसर जैगीषव्यगुहा हरिकेशवन अजामुखसर घण्टाकर्णह्रद।
कर्कोटकवापी सपर्णास्योदपान श्वेततीर्थह्रद घर्घरिकाकुण्ड
श्यामाकूप म।
चन्द्रिकातीर्थ श्मशानस्तम्भकूप विनायकह्रद सिन्धूद्भवकूप ब्रम्हसर।।
रुद्रावास नागतीर्थ पुलोमतीर्थ भक्तह्रद तथा क्षीरसर।
प्रेताधार कुमारतीर्थ कुशावर्त दधिकर्णोदपानक श्रृंगतीर्थ।।
महातीर्थ महानदी गयशीर्ष अक्षयवट कपिलह्रद म।
गृध्रवट सावित्रीह्रद प्रभासन शीतवन योनिद्वार।।
धन्यक कोकिलातीर्थ मतंगह्रद पितृकूप तथा सप्तकुण्ड।
मणिरत्नह्रद कौशिक्यतीर्थ भरततीर्थ ज्येष्ठालिकातीर्थ कल्पसर।।
कुमारधार श्रीधारा गौरीशिखर शुन:कुण्ड नन्दितीर्थ म।
कुमारवास श्रीवास कुम्भकर्णह्रद कौशिकीह्रद धर्मतीर्थ।।
कामतीर्थ उद्यालकतीर्थ संध्यातीर्थ लोहितार्णव तथा शोणोद्भव।
वंशगुल्म ऋषभ कालतीर्थ पुण्यावर्तिह्रद बदरिकाश्रम।।
रामतीर्थ पितृवन विरजातीर्थ कृष्णतीर्थ कृष्णवटम।
रोहिणीकूप इन्द्रद्युम्नसरोवर सानुगर्त माहेन्द्र श्रीनद।।
इषुतीर्थ वार्षभतीर्थ कावेरीह्रद गोकर्ण तथा गायत्रीस्थान।
बदरीह्रद मध्यस्थान विकर्णक जातीह्रद देवकूप।।

कुशप्रथन सर्वदेवव्रत कन्याश्रमह्रद वालखिल्यह्रद अखण्डितह्रद म।
एतानी अमृतनामानी सर्वतीर्थानांच महात्म्यनाम।
स्नानारंभे स्मरण मात्रेन सर्व पापं विमुच्यते।।
त्रय अहोरात्रं लंघनेन यो स्नानं करोती।
तेन तद्तद् तीर्थक्षेत्र पुण्यंच लभते।।
इह लौकिकं पारलौकिकं सुखं च प्राप्नोती।
तेन सर्व पितरस्य तृप्तीं अवाप्नोती नात्र संशयः।।
सूर्य ग्रहे चंद्र ग्रहे वा पात्रे उदकं गृहीत्वेन यो पठती।
तेन सर्व शत्रुभयं अग्नी विषादी भयं च नश्यती।।
समाज व्यवस्थायां सन्मानंच भवती।
श्री स्वामी समर्थाऽपणमस्तु।।

शुभं भवतु। शुभं भवतु। शुभं भवतु।